

পাট ও সমবর্গীয় তন্তু ফসল চাষীদের জন্য কৃষি পরামর্শ

প্রকাশনা

ভা.কৃ.অনু.প- ক্রিজাফ, নীলগঞ্জ, ব্যারাকপুর

৯-১৩ মে, ২০২২ (সংস্করণ সংখ্যাঃ ০৯/২০২২)



भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

An ISO 9001: 2015 Certified Institute

Barrackpore, Kolkata-700120, West Bengal

www.icar.crijaf.gov.in



पाट ओ सहयोगी फसल उतुपादनकारी चाषिदेर जन्य कृषि-परामर्श
९-२३ मे, २०२२

I. पाट उतुपादनकारी राजुओलर एह समयेर सञ्जवु आवहाओयार परिस्थिति

राजु/ कृषि-जलवायु अखणल/ जेला	आवहाओयार पूरुवाभास
गाङ्गेय पश्चिमबङ्ग मुर्शिदाबाद, नदिया, हगली, हाओडा, उतुतर २४ परगना, पूरुव बरुधमान, पश्चिम बरुधमान, दक्षिण २४ परगना, बाँकुडा, बीरभुम	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान २० मिलिलिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३२-३५ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २४-२७ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
हिमालय सन्निहित पश्चिमबङ्ग दार्जिलिग, कोचबिहार, आलिपुरदुयार, जलपाईणुडि, उतुतर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर, मालदा	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान १४० मिलिमिटा र पर्युतु)। एह अखणले सरुवोछ तापमात्रा ३२-३४ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २०-२२ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
आसामः मध्य ब्रह्मपुत्र उपतुयका क्षेत्र मरिगाँओ, नओगाँओ	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान ५५ मिलिमिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३२-३५ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २१-२२ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
आसामः निम्न ब्रह्मपुत्र उपतुयका क्षेत्र गुवालपाडा, धुवडि, कोकडाबाड, बङ्गईगाँओ, वरुपेटा, नलवाडि, कामरुप, बाङ्गा, चिराङ्ग	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान ७५ मिलिमिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३०-३२ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २१-२३ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
बिहारः कृषि-जलवायु अखणल २ (उतुतर-पूरुव अखणल) पूरुगिया, काटिहार, सहरुष, सुपौल, माधेपुरा, खगारिया, आरारिया, कृषाणगङ्ग	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान ९० मिलिमिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३४-३७ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २३-२५ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
उडुडियाः उतुतर-पूरुव तटीय समभुमि वालेश्वर, भद्रक, जाजपुर	आगामी १०-१३ मे हालका वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान १९० मिलिमिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३३-३५ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २५-२७ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।
उडुडियाः उतुतर-पूरुव ओ दक्षिण-पूरुव समतल अखणल केन्द्रपाडा, खुर्दा, जगत्सिंहपुर, पूरुी, नयागड, कटक (आंशिक) एवंग गङ्गाम (आंशिक)	आगामी १०-१३ मे वृष्टि सञ्जवना (मोट वृष्टि परिमान २४ मिलिमिटा र पर्युतु)। सरुवोछ तापमात्रा ३४-३७ डिग्रि एवंग सरुवनिम्न तापमात्रा २४-२७ डिग्रि सेन्टिग्रेडे र मतुओ थाकवे।

आगामी १०, ११ एवंग १२ मे, २०२२ तारिखे, तीर घुर्णि बाड अशनि र प्रतावे उडुडिया, अङ्गुप्रदेश एवंग पश्चिमबङ्गेर उपकुलवती किछु किछु अखणले हालका थेके मावारी ओ विस्फिणु अखणले भारी वृष्टि सञ्जवना।

तथु सुरुतुः भारतीय आवहाओया विभाग (<http://mausam.imd.gov.in> एवंग www.weather.com)

II. पाट फसलेर जन्य कृषि परामर्श

१। यारा २७ एप्रिल थेके १० मे तारिखेर मध्ये पाट लागियेछेन (फसलेर वयस १५-३० दिन)

- हालका जलसेच दिन, तारपर (२-३ दिन बादे) यात्रिक पद्धतिते क्रिजाफ नेल उईडार वा एक चाका पाट निडानि यन्त्र (सिप्ल हईल जुट उईडार) व्यवहार करे आगाछा नियन्त्रण करबेन। चारा पातला करे प्रति वर्गमिटाेर ५०-६० टि पाटेर चारा राखते हवे। आगाछा नियन्त्रण ओ चारा पातला करार पर (२१ दिन वयसे), नाइट्रोजेन घटित सार चापान हिसाबे दिते हवे। माबारि ओ यथेष्ठ उर्वर जमिर जन्य नाइट्रोजेन २० किलो/प्रति हेक्टेरे (ईडरिया ५ किलो ८०० ग्राम प्रति विघाय) एवं कम उर्वर जमिर फ्फेरे नाइट्रोजेन २९ किलो/ प्रति हेक्टेरे (ईडरिया ९ किलो ८०० ग्राम प्रति विघाय) सार प्रयोग करते हवे।
- सरुपाता आगाछा नियन्त्रणेर जन्य, घास गजानोर पर एवं पाट लागानोर ८-१० दिन पर, कुईजालोफप ईथाईल (५ ईसि) १ मिलि/ प्रति लिटाेर अथवा पाट लागानोर १५ दिन पर, कुईजालोफप ईथाईल (१० ईसि) ०.९५ मिलि/ प्रति लिटाेर जले मिशिये स्प्रे करते हवे।
- पाटेर चारार (अक्कुरोन्कामेर पर थेके छोटो चारा अवस्थाय) गोडा केटे देओया नील ल्यादापोका वा इन्डिगो क्यारिपिलारेर आक्रमण विषये चाषिदेर सतर्क करा ह्छे। ई पोकार आक्रमण वृष्टि पर वा जलसेच देवार पर बेशि देखा यार। ई ल्यादा पोकागुलि जमिर माटि टेलार निचे, पाट गाछेर गोडाेर काछे लुकिये थाके। एदेर नियन्त्रणेर जन्य बिकेलेर दिके क्लोरपाइरिफस् (२० ईसि) २ मिलि/ प्रति लिटाेर जले मिशिये स्प्रे करते हवे। यदि पोकार आक्रमण तार परेओ थाके, तबे प्रयोगेने, ८-१० दिन पर आवार ई कीटनाशक एकई हारे प्रयोग करते हवे।
- माटि शुक्रनो हवार जन्य, राईजोकोटनिया वा म्याक्रोफोमिना गोत्रेर छत्राक घटित गोडा पचा (काञ्च ओ माटि संयोग स्थल) देखा येते पारे। एरकम हले (शतकरा ५ भागेर बेशि), सेचेर व्यवस्था करुन, तारपरे कपार अक्लिक्लोराइड (ब्राईटक्ल ५० डब्लु.पि) शतकरा ०.५ भाग द्रवण प्रयोग करुन। ई छत्राकनाशक व्यवहारेर समय छिटानो मेशिनेर मुख-नल (नेजेल) गाछेर गोडाेर दिके ताक करे दिते हवे, याते गाछेर गोडाेर दिके बेशि ओषुध देओया यार।



पाट लागानोर २१ दिन पर,
क्रिजाफ नेल उईडार वा एक चाका
पाट निडानि यन्त्रेर फला
(स्क्र्यापार) युक्त अवस्थाय व्यवहार।



नील ल्यादापोका वा इन्डिगो
क्यारिपिलार नियन्त्रणेर जन्य (१) पाट
लागानोर आगे, हेक्टेर प्रति १५ टि
फेर्रोमोन फीड पातते हवे; (२) जमि
थेके डिमेर गादा खुंजे बेर करे नष्ट
फेलते हवे; (३) पाट लागानोर
१५ दिन पर क्लोरपाइरिफस् (२० ईसि)
२ मिलि वा, प्रफेनोफस (५० ईसि) २
मिलि वा इनडक्कार्ब (१४.५ ईसि) ०.५
मिलि, वा एमामेकटिन बेनजोयेट (५
एस.जि) ०.२ ग्राम/प्रति लिटाेर जले
मिशिये बिकेलेर दिके स्प्रे करुन।
(४) एसआई-एनपिभि २५० एल.ई
बिकालेर दिके स्प्रे करते हवे।



शुक्रनो माटि अवस्थाय, छत्राक-घटित गोडा-काञ्च संयोगस्थल पचा रोग। यदि रोग
शतकरा ५ भागेर बेशि छडिये पडे, कपार अक्लिक्लोराइड ०.५ शतांशेर द्रवण
प्रयोग करुन।

२। एप्रिले ११-२५ तारिखे मध्ये लागानो पाटेर जल्य (फसलेर वयस ३०-४५ दिन)

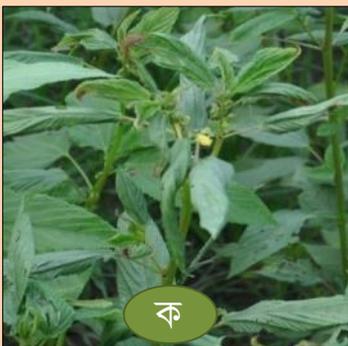
- यदि चापान सार देओया ना हये थके, तवे माटिते रस अवस्थाय हेक्टर प्रति २० किलो नाइट्रोजेन घटित सार प्रयोग करते हवे। अथवा ४०-४५ दिन वयसे, चापान सार देवार पर जलसेच करते हवे ओ प्रति बगमिटारे ५०-५५ टि पाटेर चारा राखते हवे।
- कालबेशाखी वा निम्नचापे प्रभावे हठां बेशि वृष्टि हये पाटेर जमि जलमग्न हये येते पारे, एते पाटेर वृद्धिते बिरूप प्रभाव पड़े। तई एई समय, पाटेर जमि ते १० मिटार दुरे दुरे २० सेमि चोड़ा ओ २० सेमि गतीर जल निकाशि नाला बानाते हवे, याते बेशि वृष्टि अतिरिक्त जल जमि थेके बेरिये येते पारे।
- पाटि गाछेर ३०-५० दिन वयसे, पातेर डगार बक्ष पातागुलि, वृष्टि परे धूसर पोकार (ग्रे उईडिल) द्वारा आक्रान्त हय। गाछ वड़ हवार साथे साथे, पातार काटा अंशगुलो वड़ हते थके। एई पोका धूसर वर्णेर, तार उपर सदा बिनू बिनू दाग, माथा लम्बाटे - एदेर पातार उपरे देखते पाओया यय। क्लोरपाइरिफस् (५० ईसि) एवंग साइपारमेथ्रिन (५ ईसि) एर मिश्रण, १.०-१.५ मिलिलिटार वा क्लोरपाइरिफस् (२० ईसि) २ मिलिलिटार वा कुईन्यालफस् (२५ ईसि) १.२५ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।
- चाषिदेर विशेषभावे सतर्क हते हवे ये - वृष्टि परे यदि दिनेर तापमात्रा वाड़े ओ वातासे जलीय वाष्पेर परिमान वेड़े यय - एई अवस्थाय शुंयोपोकार प्राथमिक आक्रमण हते पारे। पातार उपर एई पोकार डिम ओ छोट छोट शुक्कीट एक जायगाय दलबद्ध भावे देखा यय। परे द्रुत छड़िये पड़े ओ पातार क्षति करे। तई चाषिरा नजर करे देखे, एई सब आक्रान्त पाता तुले नष्ट करे फेलबेन। ताछाड़ा प्रयोजने ल्यामडा सायालोथ्रिन (५ ईसि) १ मिलिलिटार वा इन्डक्कार्ब (१४.५ ईसि) १ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे।
- पाटेर वयस यखन ३०-३५ दिन, तखन जमि ते माकड़ेर उपद्रव हते पारे। माकड़ेर आक्रमणेर प्रधान लक्षण हलो- पाता पुरो वा मोटा हये वावे, पातार शिरार मावेर अंश कुँचके वावे, आर डगार कचि पाता क्रमे तामाटे-बादामी रंगयेर हये वावे। चेष्टा करते हवे याते जमि ते जलेर (रसेर) अभाव ना हय, सबसमय जे अवस्था राखते पारले माकड़ थेके क्षति कम हय। यदि १० दिनेर बेशि समय धरे माकड़ेर आक्रमण चलते थके, तवे माकड़नाशक - येमन फेनपाइरिक्लिमेट (५ ईसि) १.५ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले वा स्प्राइरोमेसिफेन (२४० एस.सि) ०.९ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले वा प्रोपारगाईट (५९ ईसि) २.५ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले, १० दिन परे परे, पर्यायक्रमे व्यवहार करते हवे। यदि वृष्टि हये यय, तहले कमपक्षे ५-७ दिन अपेक्षा करेन, तार परेओ यदि माकड़ेर लक्षण थके तवे माकड़नाशक दिते पारेन।



- वृष्टि परे धूसर पोकार (ग्रे उईडिल) आक्रमण।
- क्लोरपाइरिफस् (५० ईसि) एवंग साइपारमेथ्रिन (५ ईसि) एर मिश्रण, १.०-१.५ मिलिलिटार वा क्लोरपाइरिफस् (२० ईसि) २ मिलिलिटार वा कुईन्यालफस् (२५ ईसि) १.२५ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।



- वृष्टि परे यदि दिनेर तापमात्रा वाड़े ओ वातासे जलीय वाष्पेर परिमान वेड़े यय - एई अवस्थाय शुंयोपोकार आक्रमण हय। एरा द्रुत छड़िये पड़े। चाषिरा नजर करे एदेर डिम आर शुक्कीट सह सब आक्रान्त पाता तुले नष्ट करे फेलबेन। प्रयोजने ल्यामडा सायालोथ्रिन (५ ईसि) १ मिलिलिटार वा इन्डक्कार्ब (१४.५ ईसि) १ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे।



क



ख

- क) माकड़ आक्रान्त - लागानोर ३०-३५ दिन पर
- ख) जलेर अभाव एड़न, माटिते रस बजाय राखन। फेनपाइरिक्लिमेट (५ ईसि) १.५ मिलिलिटार वा स्प्राइरोमेसिफेन (२४० एस.सि) ०.९ मिलिलिटार वा प्रोपारगाईट (५९ ईसि) २.५ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले, १० दिन परे परे, पर्यायक्रमे व्यवहार करते हवे।

३। समयमतो लागानो पाट (२५ मार्च - १० अप्रिल), फसलेर बयसः ४५-७० दिन

- कालबैशाखी वा निम्नचापेर प्रभावे हठां बेशि वृष्टि हये पाटेर जमि जलमग्न हये येते पारे, एते पाटेर वृद्धिते बिरूप प्रभाव पड़े। तहै एहै समय, पाटेर जमिमे १० मिटर दूरे दूरे २० सेमि चउडा ओ २० सेमि गतीर जल निकशि नाला वानाते हवे, याते बेशि वृष्टि अतिरिक्त जल जमि थेके बेरिये येते पारे।
- पाट गाछेर ३०-५० दिन बयसे, पातेर डगार बन्ध पातागुलि, वृष्टि परे धूसर पोकार (ग्रे उइडिल) द्वारा आक्रान्त हय। गाछ बड़ हवार साथे साथे, पातार काटा अंशगुलो बड़ हते থাকे। एहै पोकार धूसर वर्णेर, तार उपर साना बिन्दु बिन्दु दाग, माथा लम्बाटे - एदेर पातार उपरे देखते पाओया यय। क्लोरपाइरिफस् (५० ईसि) एवं साइपारमेथिन (५ ईसि) एर मिश्रण, १.०-१.५ मिलिलिटर वा क्लोरपाइरिफस् (२० ईसि) २ मिलिलिटर वा कुइन्यालफस् (२५ ईसि) १.२५ मिलिलिटर/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।
- चाषिदेर विशेषभावे सतर्क हते हवे ये - वृष्टि परे यदि दिनेर तापमात्रा बाड़े ओ वातासे जलीय वाष्पेर परिमान बेड़े यय - एहै अवस्थाय श्रुंयोपोकार प्राथमिक आक्रमण हते पारे। पातार उपर एहै पोकार डिम ओ छोट छोट शुककीट एक जायगाय दलबद्ध भावे देखा यय। परे द्रुत छड़िये पड़े ओ पातार क्षति करे। तहै चाषिरा नजर करे देखे, एहै सब आक्रान्त पाता तुले नष्ट करे फेलबेन। ताछाडा प्रयोजने ल्यामडा सायालोथिन (५ ईसि) १ मिलिलिटर वा इन्डुकार्ब (१४.५ ईसि) १ मिलिलिटर/ प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे।
- पाटेर बयस यखन ३०-३५ दिन, तखन जमिमे माकड़ेर उपद्रव हते पारे। माकड़ेर आक्रमणेर प्रधान लक्षण हलो- पाता पूरो वा मोटा हये यावे, पातार शिरार माबेर अंश कुँचके यावे, आर डगार कचि पाता क्रमे तामाटे-वादामी रंयेर हये यावे। चेष्टा करते हवे याते जमिमे जलेर (रसेर) अभाव ना हय, सबसमय जो अवस्था राखते पारले माकड़ थेके क्षति कम हय। यदि १० दिनेर बेशि समय धरे माकड़ेर आक्रमण चलते থাকे, तवे माकड़नाशक - येमन फेनपाइरिक्लिमेट (५ ईसि) १.५ मिलिलिटर/ प्रति लिटार जले वा स्पाइरोमेसिफेन (२४० एस.सि) ०.९ मिलिलिटर/ प्रति लिटार जले वा प्रोपारगाइट (५९ ईसि) २.५ मिलिलिटर/ प्रति लिटार जले, १० दिन परे परे, पर्यायक्रमे व्यवहार करते हवे। यदि वृष्टि हये यय, तहले कमपक्षे ५-७ दिन अपेक्षा करुन, तार परेओ यदि माकड़ेर लक्षण थाके तवे माकड़नाशक दिते पारेन।
- पाट चाषेर समस्त अक्षलेहै, पाटेर षोडापोकार (सेमिलुपार) पाट पाता खेये क्षति करे। एरा सरु, सबजे रंयेर देह, हलदे माथाओयाला, गायेर धार बराबर गाट सबुज रंयेर लम्बा दागयुक्त पोकार, या चलार समय माबखानटा उल्टानो इंगराजी इउ आकृतिर फाँसेर मतो देखाय। पाट गाछेर ५०-८० दिन बयसेहै बेशि आक्रमण करे। गाछेर उपरेर दिक्कार ना खोला पाता थेकेहै क्षति करा शुरु करे। आर उपरेर मोट ९ टि पातार मधोहै एदेर क्षतिर लक्षण देखा यय। पातार धारगुलो खेये खाँज करे देय; एकदम कचि पाताय आक्रमण करले - पाता आडाआडि भावे काटा देखा यय। यदि क्षतिर परिमान शतकरा १५ भाग हय, तवे प्रफेनोफस् (५० ईसि) २ मिलि वा फेन्थेलेरेट (२० ईसि) १ मिलि वा साइपारमेथिन (२५ ईसि) ०.५ मिलि प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे। कीटनाशक छेटानोर समय केवलमात्र डगार पातागुलोेर दिकेहै बेशि करे ओयुध प्रयोग करते हवे।



समयमते लागानो पाटि (फसलेर वयस ५०-७० दिन)

वृष्टि पुरे धुसर पोकार (ग्रे उइडिल) आक्रमण। क्लोरपाइरिफस (५० ईसि) एवंग साइपारमेथ्रिन (५ ईसि) एर मिश्रण, १.०-१.५ मिलिलिटर बा क्लोरपाइरिफस (२० ईसि) २ मिलिलिटर बा कुइन्यालफस (२५ ईसि) १.२५ मिलिलिटर/ प्रति लिटर जले मिशिये स्प्रे करते हवे।



वृष्टि पुरे यदि दिनेर तापमात्रा वाडे ओ वातासे जलीय वाष्पेर परिमान बेडे यय - एइ अवस्थाय शृंयोपोकार आक्रमण हय। एरा द्रुत छडिये पडे। चायिरा नजर करे एदेर डिम आर शुक्कीट सह सब आक्रान्त पाता तुले नष्ट करे फेलबेन। प्रयोजने ल्यामडा सायालोथ्रिन (५ ईसि) १ मिलिलिटर बा इन्डक्काव (१४.५ ईसि) १ मिलिलिटर/ प्रति लिटर जले मिशिये प्रयोग करते हवे।

यदि घोडापोकार (सेमिलुपार) द्वारा क्षतिर परिमान शतकरा १५ भाग बा बेशि हय, तबे प्रफेनोफस (५० ईसि) २ मिलि बा फेनडेलारेट (२० ईसि) १ मिलि बा साइपारमेथ्रिन (२५ ईसि) ०.५ मिलि प्रति लिटर जले मिशिये स्प्रे करते हवे। स्प्रे करार समय केवलमात्रे डगार पातागुलोर दिकेइ बेशि करे ओयुध प्रयोग करते हवे।



क

ख

क) मकड़ आक्रान्त - लागानोर ३०-३५ दिन पर
ख) जलेर अभाव एडान, माटिते रस बजय राखुन।
फेनपाइरिक्लिमेट (५ ईसि) १.५ मिलिलिटर बा
स्प्राइरोमेसिफेन (२४० एस.सि) ०.९ मिलिलिटर बा
प्रोपारगाईट (५९ ईसि) २.५ मिलिलिटर/ प्रतिलिटर
जले, १० दिन पुरे पुरे, पर्यायक्रमे ब्यवहार करते
हवे।

III. अन्यान्य सहयोगी तन्त्र फसलेर कृषि परामर्श

(क) शणपाट / सानहेम्प



१। यारा एखनो शणपाट फसल लागाननि

- এই সময়ে सर्वोच्च ও सर्वনিম্ন তাপমাত্রা যথাক্রমে ৩৯-৪১ ডিগ্রি এবং ২৩-২৪ ডিগ্রি হবে বলে অনুমান করা হয়েছে এবং সেই সঙ্গে উত্তর প্রদেশের শণপাট অঞ্চলে আগামী সপ্তাহে অতি সামান্য বৃষ্টি হতে পারে।
- চাষীদের জমি তৈরী করে, বীজ লাগানোর আগে জলসেচ দিয়ে শণপাট বীজ লাগাতে পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে।
- শণপাটের প্রাক্কুর, অক্কুর, শৈলেশ, স্বস্তিক, এবং কে-১২ (হলুদ) জাতের শংসিত বীজ লাগাতে হবে
- বীজবাহিত রোগ থেকে এই ফসল বাঁচাতে কার্বেন্ডাজিম ২ গ্রাম/ প্রতি কিলো বীজে মিশিয়ে বীজ শোধন করতে হবে।
- সারি করে লাগাতে হেক্টর প্রতি ২৫ কিলো এবং ছিটিয়ে বুনলে হেক্টর প্রতি ৩৫ কিলো বীজ লাগবে। শণপাট লাইন করে লাগানোর সুপারিশ করা হয় - এক্ষেত্রে সারি থেকে সারির দূরত্ব হবে ২৫ সেমি. আর (একই সারিতে) চারা থেকে চারার দূরত্ব হবে ৫-৭ সেমি, বীজ ২-৩ সেমি গভীরে লাগাতে হবে।
- বীজ লাগানোর সময়, প্রাথমিক মূলসার হিসাবে নাইট্রোজেনঃ ফসফেটঃ পটাশ - ২০ঃ ৪০ঃ ৪০ কিলো/ প্রতি হেক্টরে ভালোভাবে মাটির সঙ্গে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে।
- যে জমিতে প্রথম বারের জন্য শণপাট লাগানো হবে, এক্ষেত্রে বীজ নির্দিষ্ট রাইজোবিয়াম কালচার দিয়ে লাগানোর ৩০ মিনিট আগে ছায়ায় রেখে মিশিয়ে নিতে হবে।



ক

শণপাট বীজ
(ক) কে-১২ হলুদ;
(খ) শৈলেশ

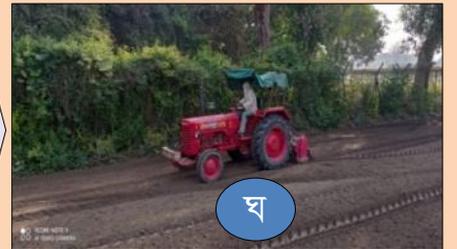


খ



গ

(গ) বীজ শোধন - কার্বেন্ডাজিম ২ গ্রাম/
প্রতি কেজি বীজে বা কার্বেন্ডাজিম (১২
শতাংশ) এবং ম্যানকোজেব (৬৩ শতাংশ)
মিশ্রণ; (ঘ) জমি তৈরী ও বীজ লাগানো।



ঘ

२। समयमतो लागानो शणपाट फसल (२७ एप्रिल - १० मे) फसलेर बयस १५-२५ दिन

- ❖ यदि बीज बोनार पर खरा चलते থাকे, पाता खाओया पोकार आक्रमण हते पावे। एही समय हालका जलसेच दिन।
- ❖ सेच देवार पर, एकवार क्रिज्याफ नेल उईडारेर पिछनेर दिके चाँहनि वा स्क्रापार लागिये वा पाटेर एक चाका निडानि यन्त्र, दुई सारिर मावखान दिये चालाते हवे, एते सब आगाछा नियन्त्रण हवे। चारा पातला करार काज सेरे फेलून याते प्रति वर्ग मिटार जमिते ५५-७० टि चारा बजाय থাকे।
- ❖ स्टेम गार्डलर ओ शँयोपोकार आक्रमण विषये चाषिदेर सतर्क थाकते हवे। यदि एही पोकार आक्रमण देखा याय, तवे क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलि प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे।



२५-३० दिन बयसेर शणपाट फसल



खरा अवस्थाय पाता खाओया पोकार आक्रमण

आगाछा नियन्त्रण ओ चारा पातला करा। सावधानता हिसावे क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलि/लिटार जले

३। एप्रिलेर माखामाखि लागानो शणपाट (फसलेर बयस २५-४० दिन)

- माटिते जलेर अभाव हले, हालका सेच देवार परामर्श देओया हच्चे। आर यदि बेशि वृष्टि हय, शीघ्र जमि थेके निकाशि नाला दिये जल बेर करे दिते हवे।
- यदि एर मध्ये वृष्टि ना हये थाके बेग माटिते जलेर अभाव हय, तवे हालका सेचेर परामर्श देओया हच्चे। सेचेर पर, २५ दिन गाछेर बयसे, एक बार हात निडानि दिते हवे - एते आगाछा दमन हवे, गाछेर वृद्धि हवे ओ एसमये प्रति वर्ग मिटारे ५५-७० टि चारा राखते हवे।
- यदि शुक्नो परिस्थिति चलते থাকे, तहले माछिर मतो फ्लि विटल पोकार आक्रमण हते पावे। एरा पाता थेये फुटो फुटो करे देय। चाषिदेर शँयोपोकार आक्रमणेर व्यापारे ओ सतर्क करा हच्चे। यदि बेशि आक्रमण हय, तहले क्लोरपाईरिफस (२० ईसि) २ मिलिलिटार वा निमतेल ३-४ मिलिलिटार/ प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करार सुपारिश करा हय।



४० दिन बयसेर शणपाट फसल



फ्लि विटल आक्रान्त शणपाट



शँयोपोकार द्वारा आक्रान्त शणपाट

খ। মেস্তা



কেনাফ / জলমেস্তা



রোজেল মেস্তা

১। মে মাসের শেষ সপ্তাহে মেস্তা লাগানো

- চাষীদের মেস্তা (রোজেল ও কেনাফ) লাগানোর জন্য জমি প্রস্তুত করতে পরামর্শ দেওয়া হচ্ছে। ভালো ফলন পেতে রোজেলের জাতগুলি হলো - এ.এম.ভি-৫, এম.টি-১৫০, এবং এইচ.এস-৪২৮৮; কেনাফের ভালো জাতগুলি হলো - জে.আর.এম-৩ (স্নেহা), এবং জে.বি.এম-৮১ (শক্তি)। বীজ লাগানোর কমপক্ষে চার ঘন্টা আগে কার্বন্ডাজিম ২ গ্রাম/ প্রতি কেজি বীজে দিয়ে মেস্তার বীজ শোধন করতে হবে।
- ছিটিয়ে বুনলে হেক্টর প্রতি ১৫ কিলো আর সারি করে লাগালে ১২ কিলো বীজ লাগবে। লাইন করে লাগানো হলে, সারি থেকে সারি দূরত্ব হবে ৩০ সেমি, একই সারিতে গাছ থেকে গাছের দূরত্ব ১০ সেমি এবং বীজের গভীরতা ২-৩ সেমি হবে। বীজ বোনার পরে মই দিলে জমির উপর ধুলোর আস্তরণ হবে, এতে মাটির জল সংরক্ষণ হবে এবং বীজের অঙ্কুরোদ্গমে সুবিধা হবে।
- বৃষ্টি নির্ভর মেস্তা চাষে, সারের মাত্রা ৪০ঃ২০ঃ২০ কিলো এন.পি.কে এবং সেচ সেবিত চাষে সারের মাত্রা ৬০ঃ৩০ঃ৩০ কিলো এন.পি.কে প্রতি হেক্টরে দিতে হবে। মোট সুপারিশকৃত নাইট্রোজেন সার ২-৩ বার ভাগ করে দিতে হবে। তবে ফসফেট ও পটাশ জমি তৈরীর সময় ৫ টন খামার সারের সঙ্গেই দিতে হবে। চাষিরা তাদের মাটি পরীক্ষার কার্ডে দেওয়া হিসাবের ভিত্তিতেও সার প্রয়োগ করতে পারবেন।
- বৃষ্টি নির্ভর চাষের ক্ষেত্রে, আগাছা দমনের জন্য, বীজ লাগানোর ২৪-৪৮ ঘন্টা পরে বুটাক্লোর (৫০ ইসি) ৪ মিলি/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। প্রতি হেক্টর জমির জন্য আগাছানাশক প্রয়োগের সময় ৫০০-৬০০ লিটার জল লাগবে।
- বীমা ফসল হিসাবে, মেস্তা ফসলের সঙ্গে চিনাবাদাম, কলাই এবং ভুট্টা লম্বা ফালি হিসাবে (৪ঃ৪) চাষ করার পরামর্শ দেওয়া হয়।



মেস্তা চাষের জন্য জমি তৈরী এবং এন.পি.কে. প্রাথমিক সার প্রয়োগ



বীজ লাগানোর কমপক্ষে চার ঘন্টা আগে কার্বন্ডাজিম ১ গ্রাম/ প্রতি কিলো বীজে দিয়ে বীজ শোধন



নয় সারি টাইন দিয়ে খোলা নালি তৈরী করে বীজ লাগানো ও জল সংরক্ষণ

ग) सिसाल

भूमिका: सिसाल (एगोड सिसालाना) प्राय-बह्वर्षजीवी पाता থেকে तন্ত উৎপাদনকারী মরুজাতীয় উদ্ভিদ। সিসালের তন্ত থেকে তৈরী দড়ি বিভিন্ন ধরনের জলযান (জাহাজ, লঞ্চ, বড় নৌকা ইত্যাদি) বাঁধার কাজে ব্যবহৃত হয়। ব্রাজিল সিসাল তন্ত উৎপাদনে ও রপ্তানিতে প্রথম স্থান অধিকার করে, আর চীন সব থেকে বেশি সিসাল আমদানি করে। ভারতের উড়িষ্যা, তেলঙ্গানা, কর্ণাটক, মহারাষ্ট্র ও পশ্চিমবঙ্গের মরুপ্রায় অঞ্চলে সিসাল চাষ হয়ে থাকে। ভারতে সিসালের মোট জমির পরিমাণ প্রায় ৭৭৭০ হেক্টর, যার মধ্যে ৪৮১৬ হেক্টর সিসাল, মাটি ও জল সংরক্ষণের জন্য ব্যবহৃত হয়। ভারতে সিসালের হেক্টর প্রতি গড় উৎপাদন অনেকটাই কম (৬০০-৮০০ কেজি), তবে সঠিক পদ্ধতি অনুসরণ করে চাষ করতে পারলে হেক্টর প্রতি উৎপাদন অনেকটাই বাড়ানো সম্ভব (২০০০-২৫০০ কেজি)। এই ফসলে জলের প্রয়োজন অনেক কম এবং মধ্যভারতের মালভূমি অঞ্চলের মাটি ও আবহাওয়া (সর্বোচ্চ তাপমাত্রা ৪০-৪৫ ডিগ্রি, বৃষ্টিপাত ৬০-১০০ সেমি) সিসালের জন্য উপযোগী, ও গ্রামীণ অঞ্চলের আর্থিক ও সামাজিক উন্নয়ণে বিশেষ সহায়ক হতে পারে। সিসাল চাষ এই অঞ্চলের উপজাতি মানুষদের জীবিকা সরাসরি ও কর্মসংস্থানের মাধ্যমে উন্নয়ণ করতে পারে। এছাড়াও সিসাল বৃষ্টির জলের বয়ে যাওয়া অপচয় ৩৫ শতাংশ ও ভূমিক্ষয় ৬২ শতাংশ কম করতে সক্ষম।

প্রাথমিক নার্সারি

- সাধারণত মার্চ থেকে মে মাসের মধ্যে বুলবিল সংগ্রহ করা হয়। সংগ্রহ করা বুলবিলগুলি তারপর বিভিন্ন গ্রেডিং করে ভাগ করা হয় ও ১ মিটার চওড়া ও জমির ঢাল অনুসারে সুবিধামতো লম্বা প্রাথমিক নার্সারিতে ১০ সেমি - ৭ সেমি দূরত্বে লাগানো হয়।
- আগাছার প্রকোপ কম করতে ও মাটিতে জল সংরক্ষণ করার জন্য নার্সারিতে মালচিং বা প্রাকৃতিক আচ্ছাদন দিলে বুলবিল তাড়াতাড়ি বাড়তে পারবে।
- প্রাথমিক নার্সারিতে আগাছা দমনের জন্য বুলবিল লাগানোর এক দিন আগে মেটোলাক্লোর ০.৫ কিলোগ্রাম প্রতি হেক্টর হিসাবে প্রয়োগ করা যেরতে পারে, তবে কিছুদিন পরে একবার হাত নিড়ানির প্রয়োজন হবে।

সিসালের মূল জমি থেকে সাকার সংগ্রহ

- প্রাথমিক ও মাধ্যমিক নার্সারির মাধ্যমে বুলবিল থেকে সাকার তৈরীর পাশাপাশি, আগে থেকে লাগানো সিসালের মূল পুরানো জমি থেকে সাকার সংগ্রহ করা যাবে। সাধারণত একটি সিসাল গাছ থেকে বছরে ২-৩ টি সাকার পাওয়া যায়। বর্ষার শুরুতে এইসব উপযুক্ত সাকার তুলে - সরাসরি নতুন মূল জমিতে লাগানো যাবে। সাকার লাগানোর আগে পুরানো শিকড় ছেঁটে ফেলতে হবে ও শুকিয়ে যাওয়া পাতা ফেলে দিতে হবে। তবে খেয়াল রাখতে হবে যে শিকড় ছেঁটে ফেলার সময়, সাকারের গোড়ার অঞ্চল যেন ক্ষতিগ্রস্ত না হয়।

নতুন সিসাল খেতের পরিচর্যা

- এক-দুই বছর বয়সের সিসাল ক্ষেতে আগাছা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থা করতে হবে, যাতে সিসালের জল ও খাদ্যের জন্য আগাছার সঙ্গে প্রতিযোগিতা কমে যায়। জেব্রা রোগের প্রাথমিক লক্ষণ দেখা গেলে - কপার অক্সিক্লোরাইড ৩ গ্রাম প্রতি লিটারে বা ম্যানকোজেব ৬৪ শতাংশ ও মেটালাক্সিল ৮ শতাংশ মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। সঠিক বৃদ্ধি ও ফলনের জন্য হেক্টর প্রতি ২ টন সিসাল কম্পোস্ট এবং ৬০ঃ৩০ঃ৬০ কিলো এন.পি.কে. সার প্রয়োগ করতে হবে। প্রথম বছর, সিসাল গাছের চারধারে গোল করে সামান্য গর্ত করে সার প্রয়োগ করতে হবে।



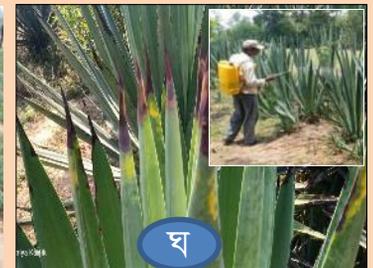
ক



খ



গ



ঘ

(ক) সিসাল পাতা কাটা, (খ) পাতা ছাড়ানো, (গ) বুলবিল সংগ্রহ ও প্রাথমিক নার্সারিতে তা লাগান, (ঘ) জেব্রা রোগ নিয়ন্ত্রণের জন্য কপার অক্সিক্লোরাইড ২-৩ গ্রাম/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ

मूल जमिने सिसाल लागानो

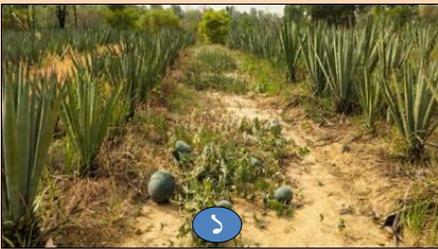
- पुरानो मूलजमिर सिसाल थेके सरासरि तोला सिसाल साकार ओ माध्यमिक नार्सारि थेके पाओया सिसाल साकार व्यवहार करे सिसालेर नतून मूल जमिने चारा लागते पारले भालो हय। माध्यमिक नार्सारिने बड कर साकार, पुरानो पाता ओ शिकड हेँटे मूल जमिने लागते हवे। लागानेर आगे म्यानकोजेव ७४ शतांश ओ मेटालाञ्जिल ८ शतांश - २.५ ग्राम प्रति लिटार जले मिशिये २० मिनिटेर जल्य साकारेर शिकड अञ्जल धुये निते हवे। साकार पिटेर गर्तेर माबखाने सूचालो कार्ठिर साहाय्य निये लागते हवे।
- साकारेर आकार (साइज) ३० सेमि लम्बा, २५० ग्राम ओजन ओ ५७ टि पाता विशिष्ट हते हवे। ये सब साकारे रोग-पोकार वा अन्य कोनो प्रकार चापेर (खानेर वा जलेर अभाव युक्त) लम्फण आछे, सेङुलि बान दिते हवे।
- सिसाल गाछेर द्रुत बुद्धिर जल्य हेक्टेर प्रति ५ टन सिसाल कम्पोस्ट, ७० केजि नाइट्रोजेन, ३० केजि फसफेट, ७० केजि पाटाश दिते हवे। नाइट्रोजेन सार २ बाने दिते हवे - मोट परिमानेर अर्धेक वर्षा शुरु आगे, आर बाकि अर्धेक वर्षा चले याबार पर।
- ये सब चाषिरा एखनो जमि निर्वाचन करेननि, तादेर जल ना दाँडाय एमन जमि निर्वाचन करते हवे याते कमपफे १५ सेमि गडीर माटि थाकते हवे। टालू जमिने सिसाल चाषेर फ्लेव्रे, पुरो जमि चाष देवार दरकार नेई।
- आगाछा, बोपबाड परिसकार करे १ घन फुटेर पिट ३.५ मिटार — १ मिटार-१ मिटार दूरे दूरे बानाते हवे, एते ४,५०० टि पिट हवे येखाने वर्षार शुरुते दुई सारि (डबल रो) पद्धतिने सिसाल लागते हवे। तबे प्रतिकूलपरिस्थितिने ३.० मिटार — १ मिटार-१ मिटार दूरे दूरे पिट करे, प्रति हेक्टेर ५,००० टि साकार लागानो यावे।
- सिसालेर जल्य तैर्री करा पिट, माटि ओ सिसाल कम्पोस्ट दिये भर्ति करते हवे, याते माटि बुरबुरे थाके। अन्न माटिर जमिने हेक्टेर प्रति २.५ टन हारे चून प्रयोग करते हवे। पिटेर गर्तेर मध्ये एमन भावे माटि पूर्ण करते हवे याते १-२ इन्च ऊँच हये थाके, एते सिसाल साकार सहजे दाँडाते पारवे।
- माटिर फ्लय रोध करते, सिसाल साकार जमिर स्वाभाविक टालेर आडाआडि ओ समोन्नति रेखा बराबर लागते हवे। साकार संग्रहरे ४५ दिनेर मध्ये जमिने साकार लागानो सम्पूर्ण करते हवे। लागानेर परे हेक्टेर प्रति कमपफे १०० टि अतिरिक्त साकार आलादा करे राखते हवे, याते प्रयोजने कोनो कारणे खालि यये याओया जायगाय आबार सिसाल चारा लागिने जमिने सिसाल चारार आदर्श संख्या बजाय राखा यय।
- पुरानो मूलजमिर सिसाल थेके सरासरि तोला सिसाल साकारेर परिवर्ते, माध्यमिक नार्सारि थेके पाओया सिसाल साकार व्यवहार करे सिसालेर नतून मूल जमिने चारा लागते पारले भालो हय।

बुलबिल संग्रह - सिसालेर पुस्पदण्ड (याके पोल बला हय) बेर हले, सिसालेर पातार बाड वा बुद्धि बङ्ग हये यय। एई प्रत्येकटि पोलै प्राय २००-५०० टि बुलबिल तैर्री हय; बुलबिले ४-९ टि छोट छोट पाता थाके। एई बुलबिलुलि जमि थेके संग्रह करे प्राथमिक नार्सारिने सिसाल रोपन सामग्री हिसावे लागते हवे।

सिसाल पाता काटा - क्रमशः वातासेर तापमात्रा बेडे याछे, ताई देरि ना करे अबिलखे सिसाल पाता काटा शेष करते हवे, ता ना हले सिसाल तन्तुर उँपादन कमे यावे। बिकेलेर दिके सिसाल पाता काटते हवे एवं चेष्टा करते हवे याते एकई दिने पाता थेके आँश छाडानो हये यय। पाता काटार परे, रोगेर हात थेके सिसाल बाँचाते, कपार अञ्जिकेराइड २-३ ग्राम/प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।

अतिरिक्त आयेर जल्य सिसालेर सङ्गे अन्तर्बती फसलेर चाष

- दुई सारि सिसालेर माबखानेर जमिने अन्तर्बती फसल हिसावे तरमुज एवं क्लास्टर वीन चाष करे यथाक्रमे ५२,००० ओ २९,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे। एई सब फसले जीवनदायी सेच दिते हवे एवं रोग-पोका थेके सुरक्षार जल्य व्यवस्था करते हवे। एकई भावे सिसालेर सङ्गे आम ओ अन्यान्य फल चाष करे हेक्टेर प्रति ७४,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे। एई व्यवस्थाय फल गाछेर रोग-पोका थेके सुरक्षार जल्य व्यवस्था करते हवे।



१



२



३

सिसालेर जमिने अन्तर्बती फसल (१) तरमुज, (२) काजू, (३) आम

सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

खरा प्रबन आदिवासी अधुषित अषधले सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था लाडजनकभावे करा येते पारे। एते चाषिर आय वाडवे, कर्मसंस्थान हवे ओ दीर्घमेयादि कृषि व्यवस्था पाओया यावे। एई व्यवस्थाय स्थानीय भावे पाओया विभिन्न धरनेर उँसके काजे लागीये ओ फसलेर अवशिष्टांश व्यवहार करे - यथेष्ठ आयेर संस्थान हवे। एई सिसाल भित्तिक खामार व्यवस्थाय फसलेर पाशापाशि विभिन्न प्राणी पालनेर व्यवस्था रेखे एई सुसंहत खामार व्यवस्था अर्थनैतिक भावे सफल ओ सार्थक भावे रूपायित हते पारे।

- १। एई खामारे १०० टि विभिन्न जातेर मुरगि येमन - बनराजा, रेड रुस्टार, कडकनाथ पालन करे ८,०००-१०,००० टाका निट लाड हते पारे।
- २। चाषिरा एई खामार व्यवस्थाय दुई गरू पालन करे प्रति बहर २५,००० टाका अतिरिक्त लाड करते पारेन। सिसाले सङ्गे असुरवती फसल हिसावे गोखाद्य चाष, एई गरूर खाओयार जन्य योगान देओया यावे।
- ३। एई व्यवस्थाय १० टि हागल पालन करे प्रति बहर आरो १२,०००-१५,००० टाका अति रिक्त आय हते पारे।
- ४। सिसाले सङ्गे दुई सारिर माखाणे ये उँचू जमिर धान (कादा ना करे शुधु चाष दिये) फलानो हवे, तार खड व्यवहार करे माशरुम चाषेर माध्यमे बहरे १२,००० टाका लाड हते पारे।
- ५। सिसाल चाषेर बर्ज ओ माशरुम तैरीर बर्ज व्यवहार करे भार्मिकम्पोस्त तैरी करे व्यवहार करा यावे, एते माटिर स्वास्थ्य भालो थाकवे ओ बहरे १८,००० टाका अतिरिक्त लाड हवे।
- ६। सिसाल साधारनत टालु ओ उँचू जमिने लागानो हय - ताई एई अवस्थाय वृष्टिर जल धरे लाडजनकभावे व्यवहार करा यावे। येहेतु एई अषधले एमनितेई अपेष्काकृत कम वृष्टि हय, ताई वृष्टिर जल धरार व्यवस्था करे - ए जल दिये अन्यान्य भावेओ आय वृद्धि हते पारे। एक हेक्टेर सिसाले जमिर मात्र एक दशमांश एई जल धरार जन्य व्यवहृत हवे। एई जल धरार पुकुरेर माप हवे ३० मिटार-३० मिटार-१.८ मिटार, आर १.८ मिटार चओडा पाड हवे। एई पुकुरे जल धरे ये ये भावे व्यवहार करे लाडवान हओया यावे ता हलो -
 - सिसाले सङ्गे चाष करा असुरवती फसलेर संकटकालीन सेच एई पुकुरेर जल व्यवहार करे देओया यावे। एते एई सब फसलेर उँपदन ओ आय वाडवे।
 - एई जल व्यवहार करे सिसाले आँश छाडानोर परे थोया यावे।
 - पुकुरेर पाडे विभिन्न उँचतार फसल येमन - पेपे, कला, नारकेल, सजने एवं अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति बहर १५,०००-२०,००० टाका आय हते पारे।
 - मिश्र माछ चाष पद्धतिते कातला, रुई, मृगेल चाष करे प्रति बहर १०,०००-१२,००० टाका आय हते पारे।
 - एई जले १०० टि हाँस पालन करे प्रति बहर प्राय ८००० टाका आतिरिक्त आय हते पारे।



उडियार सखलपुर जेलार वामडाय सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

ग) रेमि



- এই সময় চাষিরা রেমির নতুন খেত শুরু করতে পারেন। পুরানো রেমির জমিতে - অসমান ভাবে বেড়ে ওঠা রেমি কাণ্ডগুলি সমান ভাবে কেটে ফেলতে হবে (স্টেজ ব্যাক), তারপর সার প্রয়োগ ও জলসেচ দিতে হবে।
- হাজারিকা (আর ১৪১১) জাতের ভালো রেমি রাইজোম বা চারা ব্যবহার করতে হবে। এই রাইজোম বীজশোধনের ছত্রাকনাশক দিয়ে ভালোভাবে শোধন করে নিতে হবে। সারি করে লাগাতে হবে; রাইজোমের পরিমাণ হবে ৮-৯ কুইন্টাল/ প্রতি হেক্টরে বা প্রতি হেক্টরে ৫৫-৬০ হাজার চারা বা কাণ্ড-কাটা লাগবে।
- তিন-চার বার আড়াআড়ি ভাবে চাষ দিয়ে ভালোভাবে জমি তৈরী করতে হবে। জমিতে ৪-৫ সেমি গভীর লম্বা নালি করতে হবে; এই নালিতে সারি করে ১০-১২ সেমি সাইজের রাইজোম ৩০-৪০ সেমি দূরে দূরে লাগাতে হবে। রেমির সঠিক বেড়ে ওঠার জন্য সারি থেকে সারির দূরত্ব হবে ৭৫-১০০ সেমি।
- দুই সারি রেমির মাঝখানের জায়গায় স্থানীয় চাষিদের পছন্দ অনুযায়ী অল্পদিনে ফলন দেয় এমন ফসল চাষ করা যেতে পারে। তবে অনেক ক্ষেত্রে রেমির সঙ্গে আনারস, পেঁপে ইত্যাদিও চাষ করা যায়।
- রেমি ফসলের সঠিক বৃদ্ধির জন্য ও মাটির স্বাস্থ্য বজায় রাখার জন্য অর্জৈব সারের সঙ্গে জৈব সার (খামার সার বা রেমি কম্পোস্ট) প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। লাগানোর ৪০-৫০ দিন পর নাইট্রোজেনঃ ফসফেটঃ পটাশ ২০ঃ১০ঃ১০ কিলো/ প্রতি হেক্টরে প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়। এর পর, প্রত্যেক বার রেমি কাটার পর, হেক্টর প্রতি ৩০ঃ১৫ঃ১৫ কিলো, এনঃপিঃকে সার দিতে হবে। রেমি লাগানোর ১৫-২০ দিন আগে হেক্টর প্রতি ১০-১২ টন হারে খামার সার প্রয়োগ করতে পারলে ভালো হয়।
- কীট-পতঙ্গ ও রোগের আক্রমণের মাত্রা বুঝে ক্লোরপাইরিফস ০.০৪ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ২.৫ গ্রাম/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করার পরামর্শ দেওয়া হয়।
- সময়মতো রেমি কাটা অতি গুরুত্বপূর্ণ, আগে লাগানো ফসলের জন্য, প্রতি ৪৫-৬০ দিন পর পর কাটতে হবে। রেমির বয়স বেশি হয়ে গেলে, আঁশের গুণমান খারাপ হয়ে যায় ও দাম কম পাওয়া যায়।
- যে সব আগাছানাশক সব আগাছা মারতে পারে (বাছাই ক্ষমতাহীন) ও মাটিতে বিশেষ দূষণের কারণ হয় না, তা দিয়ে আগাছা দমন করতে হবে।
- সরুপাতা ঘাসজাতীয় আগাছা নিয়ন্ত্রণের জন্য, রেমি কাটার ২০ দিন পর কুইজালোফপ্ ইথাইল (৫ ইসি) প্রতি হেক্টরে ৪০ গ্রাম প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়।
- রেমি জল জমা সহ্য করতে পারে না। তাই জমি তৈরীর সময় জল নিকাশী নালা তৈরী করে রাখতে হবে এবং বেশি বৃষ্টির সময় অতিরিক্ত জল বের করে দিতে হবে।



নতুন রেমি লাগানোর জন্য - রাইজোম ও চারা

রেমি রাইজোম লাগানো

রেমি ফসল কাটা



রেমি কাণ্ড কাটার পরে পাতা ছাড়ানো

রেমির আঁশ ছাড়ানো

রেমি তন্তু (আঠা সহ) ছাড়ানোর পর রোদে শুকানো

पाट ओ मेस्ता चाषे जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक परिवेशवाक्खव स्वनिर्भर खामार व्यवस्था

- वृष्टिर अनियमित वितरण, पाट पाचानोर जनु उपयुक्त सर्वसाधारणेर पुकुरेर अभाव, माथाप्रति कम जलेर योगान, चाषेर खरच ओ कुषि श्रमिकेर मजुरि वृद्धि, पुकुर - नदी - नाला शुक्रिये याओया इत्यादि विवेचना करे देखा याय, चाषिरा पाट ओ मेस्ता पाचानोते असुविधार सम्बुधीन ह्छेहन। कम जले एवं सर्वसाधारणेर पुकुरेर मयला जले क्रमागत पाट पाचानोर फले, पाटेर आंशेर मान खाराप ह्छे एवं आन्तर्जातिक बाजारे प्रतियोगिताय टिके थाकते पारहे ना।
- एहि सब समस्यार समाधानेर जनु - वर्षा शुरुर आगेहि चाषिरा जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक खामार व्यवस्था ग्रहन करे पाट ओ मेस्ता चाषे लाभवान हते पारैन। साधारणत पाट चाषेर अध्जले वृष्टिपातेर परिमान ভালो (वार्षिक १२००-२००० मिलिमिटर) एवं एर प्राय ७०-८० शतांश वृष्टिर जल वये चले गिये नष्ट हय, यार किछुटा अंश जमिर स्वाभाविक निचु दिके पुकुर तैरी करे धरे राखा येते पारे।

पुकुरेर माप एवं एक एकर जमिर पाट पाचानोर जनु पचन पद्धति

- पुकुरटिर आकार हवे ८० फुट लम्बा, ७० फुट चओडा ओ ५ फुट गभीर। एक एकर जमिर पाट वा मेस्ता एहि पुकुरे दु'वार जग देओया यावे। पुकुरेर पाड यथेष्ट चओडा (१.५-१.८ मिटर) हवे, याते पेँपे, कला ओ सज्जि लागानो याय। एहि खामार प्रणालि/ व्यवस्थाय पुकुर ओ तार पाडु निये मोट आयतन १८० बर्ग मिटर हवे। चाषिरा यदि एहि खामार प्रनालिते आरो वेशि परिमाने जमि व्यवहारे इच्छुक, तहले पुकुरेर माप ५० फुट-७० फुट-५ फुट हते पारे।
- पुकुरेर भितरेर दिके १५०-३०० मइक्रनेर कुषिते व्यवहार योग्य पलिथिन दिये टेके दिते हवे याते पुकुरेर जल चुइये वा निचे चले गिये नष्ट ना हय।
- एकसङ्गे तिनटि जाक तैरी करते हवे एवं एक एकटि जाके तिटि करे सुतर थाकवे। पुकुरेर तलार माटि थेके जाक २०-३० सेन्टिमिटर उपरे थाकवे एवं जाकेर उपर २०-३० सेन्टिमिटर जल थाकवे।

जमिटेहि तैरी पचन पुकुरेर सुविधा

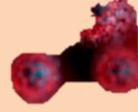
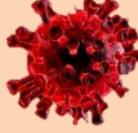
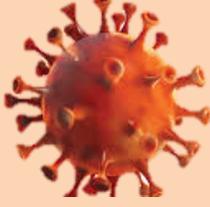
- प्रचलित पद्धतिते पाचानोर फ्फेरे पाट केटे पाचानोर पुकुरे वये निये याओयार खरच एकर प्रति ८०००-५००० टाका एहि पद्धतिते साश्रय हवे।
- प्रचलित पद्धतिते १८-२१ दिने पाट पचे; किन्तु एहि नतुन पद्धतिते एकरे १८ केजि क्रुइज्याफ सोना व्यवहार करे १२-१५ दिने पाट पचे यावे। द्वितीय वार पाचानोर समय क्रुइज्याफ सोना अर्धेक लागवे एवं एते ८०० टाका खरच बाँचवे।
- पाट पाचानोर जनु वृष्टिर नतुन धरा जल व्यवहार करले वा ए समय वृष्टि हले - धीरे वये चला जल पाओया यावे एवं आंशेर गुनमान कमपक्के १-२ ग्रेड उन्नत हवे।

तैरी करा पुकुरे पाट ओ मेस्ता पाचानो छाडाओ वृष्टिर धरा जल आरो विभिन्न उपाये व्यवहार करा यावे -

- १। विभिन्न उच्चतार वागिचा फसल व्यवहार माध्यमे पेँपे, कला, अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति ट्याक्के प्राय १०,०००-१२,००० टाका लाभ हवे।
 - २। वायुते श्वास निते पारे एमन माछ येमन - तिलापिया, मागुर, शिषि माछ चाष करे ५०-६० केजि माछ पाओया येते पारे।
 - ३। एहि व्यवस्थाय मोमाछि पालन करा यावे (प्रति ट्याक्के लाभ ९,००० टाका) एवं एते बीज उपादने परागमिलने सुविधा हवे।
 - ४। माशरुम चाष, भार्मिकम्पेपेण्ट तैरी करे आय हते पारे।
 - ५। एहि पुकुरे प्राय ५० टि हाँस पालन करे ५,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे।
 - ६। पाट पाचानो जल, पाटेर सङ्गे फसलचक्र लागानो सज्जि ओ अन्यान्य फसलेर सेचेर जनु व्यवहार करा यावे एवं प्रति एकरे ८,००० टाका अतिरिक्त लाभ हते पारे।
- सुतरां जमिटे एहि पद्धतिते पुकुर वानिये, मात्र १,०००-१,२०० टाकार पाटेर श्कति करे, चाषिरा अनेक धरनेर फसल फलिये, प्राणी-मत्स-मोमाछि पालन करे प्राय ३०,००० टाका आय करते पारैन। एछाडाओ एहि पद्धतिते चाषेर फले बहनेर खरच प्राय ८,०००-५,००० टाका बाँचवे। सेहि सङ्गे एहि प्रयुक्ति, चाषवासे चरम आवहाओयार - येमन खरा, बन्या, घूर्णिबाड़ इत्यादिर श्कतिकर प्रभाव कम करते सम्म।

ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

IV. कोरोना (COVID-19) भाईरसैर संक्रमण छडिऐे पडा ठैकाते ये ये निरापत्रामूलक ओ प्रतिरोध व्यवस्था ग्रहन करते हबे एवं मेने चलते हबे



- 1। कुषकदेर चाषबासेर काऐेर समय निरापत्रा व्यवस्था हिसाबे एक जनेर थेके आरेक जनेर सामाजिक दूरत्व बजाय राखते हबे। चाषिा जमि चाष, बीज बपन, आगाछा नियत्रण, जलसेच देओया इत्यादि काऐेर समय डाञ्जारी परामर्श मतो मुखोस (मास्क) परबेन, आर माबे माबे सावान-जल दिऐे हात धोबेन।
- 2। यखन एकई कुषि यत्रपाति येमन - लाङ्गल, ट्राक्टर, पाओयार टिलार, बीज बपन यत्र, निडानि यत्र, जलसेचेर पासप अनेके मिले पर पर भागाभागि करे व्यवहार करबेन, तखन खेयाल राखते हबे ँई यत्रपातिगुलि येन सठिकभाबे परिस्कार करा हय। कुषि यत्रपातिर ये ये अंश बार बार हात दिऐे स्पर्श करते हय, सेई अंशटा सावान जल दिऐे धुऐे निते हबे।
- 3। चाषेर काऐेर फाँके अवसरेर समय, खाबार खाओयार समय, बीज शोषनेर समय एवं सार नामानो बा तोलार समय - पर्याप्त सामाजिक दूरत्व (कम पक्षे 3-8 फुट) बजाय राखते हबे।
- 4। यतोटा संभव, कुषि काऐे परिचित लोकेदेरई काऐे लागान। बालोभाबे खौज खबर निऐेई सेई मजूर काऐे लागते हबे, याते कोनो कोरोना भाईरस बाहक कुषिकाऐे आपनार अण्गले चले आसते ना पाऐे।
- 5। बीज ओ सार परिचित दोकान थेके किनबेन एवं दोकान थेके फिरे आसार परेई सावान जल दिऐे बालोभाबे हात धुऐे नेबेन। बाजारे बीज, सार इत्यादि किनते याबार समय अवश्यई मुखोस (मास्क) परबेन।
- 6। कोभिड-19 भाईरस रोग संक्रांश जरुपरि स्वास्थ परिसेवा विषये तथ्य जानार जन्य आपनार स्मार्ट मोबाईले 'आरोग्य सेतु' नामेर ँप्लिकेशन सफटओयार व्यवहार करुन।



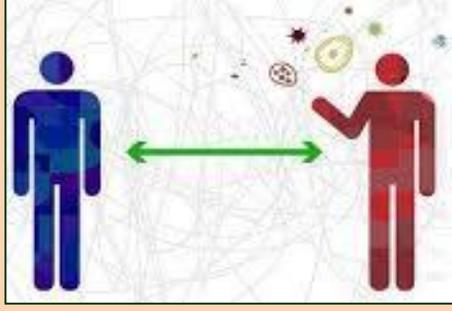
माबेमाबे सावान दिऐे हात धोयार अत्रास करुन

हँचि बा काषिर समय रुमाल बा टिसू कागज चापा दिन

बार बार चोख-मुख हात दिऐे स्पर्श करबेन ना

बाहरे सब समय मास्क बा मुखोस व्यवहार करुन

V. पाट कलेर (जूट मिल) कर्मचारिदर जन्य परामर्श



- पाट कल (जूट मिल) चालू राखार जन्य, पाट कलेर सीमानार मध्ये थाका कर्मचारिदर दिये छोटो छोटो ब्याचे, वारे वारे शिफ्ट करे काज चलाते हवे।
- पाट कलेर मध्ये आनेक जायगाय कलेर (जल) व्यवस्था करते हवे, याते कर्मचारिरी मावे मावे हात धुये निते पारैन। काज चलाकालीन अवस्थाय, कर्मचारिरी धूमपान करबेन ना।
- मिलेर शौचागार गुलि वार वार परिसकार करते हवे, याते कर्मचारिरी रोगेर आक्रमणे ना पडेन।
- कर्मचारिदर, ग्लाउस, जूतो, मुख टाकार व्यवस्था एवं अन्यान्य सुरक्षार जन्य परामर्श दिते हवे।
- मिलेर मध्येई, काजेर जायगा वार वार बदल करा येते पारे, याते कर्मचारिदर मध्ये पारामर्श मतो सामाजिक दूरत वजाय থাকे।
- ये सम कर्मचारिदर यन्त्रपातिर (मेशिनर) अनेर स्थाने वार वार हात दिते हय, तादर जन्य आलादा भावे हात धोयार वा स्यानिटाईज करार व्यवस्था राखते हवे। एछाडांओ मेशिनर ओई जायगागुलो वार वार सावान जल दिये परिसकार करते हवे।
- वयस्क कर्मचारिदर अपेक्षकृत फाँका वा भिड कम जायगाय काज दिते हवे, याते तादर भाईरासेर संक्रमण ना हय।
- मिलेर कर्मचारिरी टिफिनर समय वा अवसरेर समय भिड करे एक जायगाय आसबेन ना एवं ७-८ फुट दूरत वजाय रेखेई हात धोबेन।
- यदि कौनो मिल कर्मचारिरी ई धरनेर शारीरिक समस्या देखा यार, तवे तिनी अबिलम्बे प्राथमिक सावधानता अबलम्बन करे मिलेर डाक्टर वा मिल मालिकेर सङ्गे योगायोग करबेन।



आपनादर सबाईके सुस्थु ओ निरापद थाकार जन्य शुभेच्छा जानाई

धारणा ओ प्रकाशनाः

डः गौराङ्ग कर,
निर्देशक,
भा.कृ.अ.प - क्रिजाफ,
नीलगण्ज, ब्यारकपुर,
कोलकाता-९००१२१, पश्चिमबङ्ग

Acknowledgement: The Institute (ICAR-CRIJAF) acknowledges the contribution of the Chairman and Members of the Committee of Agro-advisory Services of ICAR-CRIJAF; Heads of Crop Production, Crop Improvement and Crop Protection Division, In-charges of AINPJAF and Extension section of ICAR-CRIJAF and other contributors of their Division/ Section; In-charges of Regional Research Stations of ICAR-CRIJAF and their team; In-charge AKMU of ICAR-CRIJAF and his team for preparing this Agro-advisory [Issue No: 09/2022 (9-23 May, 2022)]